तृतीय अध्याय
यशपाल पूर्व कहानियों में नारी

यशपाल पूर्व कहानियों में नारी -

` यशपाल पूर्व कहानियों मे नारी ` का विवेचन आरंभ करने के पूर्व मैने यह आवश्यक समझा कि भारतीय नारी का इतिहास मोटे तौर पर वैदिक युग से प्रारंभ कर यशपाल के समय तक, पृष्ठभूमि के क्रम में, [illegible] प्रस्तुत किया जाय और इस दृष्टि से अत्यंत संक्षेप में इस पर दृष्टिपात किया गया है।

भारतीय नारी -

प्राय: विश्व की सभी प्राचीन सभ्यताओं में नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय रही है। फिर भी भारत में अत्यंत प्राचीन वैदिक सभ्यता में आर्य नारी को सम्मान के साथ देखा जाता था। वैदिक युग में, और कुछ बाद तक भी, आर्य नारी को वे सभी सुविधाएँ और वे सारे अधिकार प्राप्त थे, जिनके लिए आधुनिक नारी संघर्ष कर रही है। पर इतिहास

हमे बताता है कि भारतीय नारी वैदिक युग के सम्मान पूर्वक पद पर अधिक दिनों तक रह नही सकी । धीरे धीरे उसके सम्मान जनक और समतामय स्थान का ह्रास होने लगा और वह सहचरी के महान पद से दासी के निम्न स्तर पर उतर गयी । इसके सामजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक कारण थे । ६०० ई.पू. तक नारियोंने यज्ञाधिकार से अपने को पूर्ण रूप से वंचित पाया । आगे २०० ई.पू. के बाद कन्याओं का उपनयन संस्कार बंद हो गया जिसके परिणाम स्वरूप उनकी शिक्षा का महत्व भी कम हो गया । वे वेद पढने के अधिकार से भी वंचित हो गयी । यज्ञाधिकार और वेदों के अध्ययन से विहीन हो कर इस समय तक तनारी शूद्रों के तुल्य समझी जाने लगी ।

गुप्त युग के बाद नारियों की विवशता और पुरूषों की प्रभुता सर्वमान्य हो गयी थी । पुरूष की शारीरिक शक्ति और स्वामित्व की भावना तथा नारी की शारीरिक निर्बलता अत: संरक्षण की आवश्यकता उसकी आर्थिक पराधीनता और प्रेम में समर्पण की भावना ने इसे बढावा दिया । इन्ही दिनों परिव्राजको द्वारा ब्राह्मण ग्रंथों के कर्मकाण्ड प्रधान धर्म का प्रबल विरोध किया गया एवं वैराग्यमूलक बौध्द धर्म और जैन धर्म का प्रसार हुआ । वैदिक धर्म से सम्बध्द षडदर्शनों का भी निर्माण हुआ । इस प्रकार भारत में संन्यास और निर्वाण का जोर बढने लगा । इस धार्मिक परिवर्तन के कारण भी नारी की स्थिति पतन की ओर अग्रसर हुयी । ऐसे ही समय संन्यास मार्ग द्वारा ज्ञान बूझाकर नारियों के प्रति विद्वेष और निंदा की भावना फैलाने का काम किया गया । इस युग में वराहमिहिर ही एकमात्र ऐसे चिंतक हुए, जिन्होंने नारी निंदक उन संन्यासियों को फटकारा, जो स्वयं अपने इंद्रियों के दास थे । और अपने कर्मों के लिए नारियों को दोषी ठहराते थे । किन्तु उनका प्रबल विरोध अरण्य-रोदन सिध्द हुआ । इस समय का पूरा संस्कृत साहित्य - धर्मसूत्र, पुराण, स्मृति,

रामायण, महाभारत आदि नारी के प्रति अत्यंत अनादर और निन्दा सूचक वाक्यों से भरे हुए है ।

दिन-ब-दिन नारी की स्थिति और भी गिरती गयी । ईसा की तीसरी शती से हिंदू नारी के लिए पराधीनता, निंदा, अशिक्षा, पर्दा, बालविवाह, बहुविवाह, विधवा विवाह-निषेध, सती प्रथा, सतीत्व आदि के एकांगी आदर्श और नैतिकता के दोहरे मानदण्ड द्वारा जो चतुर्दिक घेरा डाला गया, वह विभिन्न सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक परिस्थितियों के कारण उत्तरोत्तर जटिल होता गया । विभिन्न विदेशी आक्रमणों के कारण युध्द और संघर्ष हुए, भारतीयों के मतभेद, वैमनस्य तथा संगठन के अभाव के कारण भारत परतंत्र हुआ और बिलकुल विभिन्न आचार विचार वाले इस्लाम धर्म के अनुयायियों से बहुत दिनों तक और बाद में ईसाई धर्मावलम्बियोंसे अपेक्षाकृत कम समय तक, हिंदू धर्म को लोहा लेना पड़ा । परिणाम यह हुआ कि हिंदुओंने अच्छे अथवा बुरे सभी धार्मिक नियमों को वेद वाक्य माना । विदेशी शासकोंद्वारा पराधीन बनाए गये गुलाम पुरुषोंकी गुलाम स्त्रियोंकी दुरवस्था का सहज ही अनुमान किया जा सकता है ।

सर्वप्रथम राजा राममोहन राय (सन् १७७४-१८३३ ई.) का ध्यान भारतीयों की इस हीन दशा की ओर गया । उनका नाम दो सुधारों से जुड़ा हुआ है - सती प्रथा का निषेध और अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार । सती-प्रथा का प्रत्यक्ष संबंध नारी की स्थिति से है । सन् १८२९ ई. के एक कानून द्वारा विधवाओं को पति के शव के साथ जला देना एक अपराध माना जाने लगा और सन् १८६०-६१ ई. तक यह प्रथा एकदम बंद हो गयी । इस प्रकार नारी के उत्थान के इतिहास का भारत में आरंभ हुआ । बाद में

ईश्वरचंद विद्यासागर ने विधवा की दयनीय स्थिति को देखते हुए विधवा-विवाह का आंदोलन चलाया और उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप सन् १८५६ ई. में विधवा-पुनर्विवाह अधिनियम बनाया गया। आगे चलकर स्त्रियों की स्थिति को सम्मान पूर्ण बनाने में आर्य समाज (१८७५) का योगदान महत्वपूर्ण रहा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने भारतीयों मे प्राचीन संस्कृति और साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न की, जो नारियों के उत्थान में सहायक हुयी। कांग्रेस के साथ प्रति वर्ष बैठनेवाली भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक परिषद (१८८७) भी स्त्रियोंकी दशा सुधारने के लिए विभिन्न प्रस्तावों को स्वीकृत करके जनता और सरकार का ध्यान उन कुरीतियों की ओर आकृष्ट करती रही। जिनके कारण स्त्रियों की हीन दशा थी।

इस प्रकार इस काल में स्त्रियों की शोचनीय स्थिति में परिवर्तन लाने वाले प्रभाव जारी थे, जो १९ वी सदी तक के सुधारों के प्रयत्न स्वरूप हो रहे थे। किन्तु वर्तमान सदी के आरंभ के बाद ही उनके प सुपरिणाम देखने को मिले। इस समयतक उच्च शिक्षा प्राप्त नारियाँ अपने नये उत्तरदायित्वों का अनुभव करने लगी। उनका कार्यक्षेत्र बढ रहा था। सेवा की भावना और राष्ट्रीय प्रगति की आकांक्षा उनके हृदय में स्थान ग्रहण कर रही थी।

अब तक हमने भारतीय समाज में वैदिक युग से लेकर बीसवी शताब्दि के आरंभ तक नारी की स्थिति में जो परिवर्तन आये उसका संक्षिप्त इतिहास देखा। साहित्य समाज का प्रतिबिंब होता है। इसी कारण समाज की अच्छाइयों तथा बुराईयोंका सीधा चित्रण हमे साहित्य में देखने को मिलता है। भारतीय समाज में नारी जीवन में जो उतार-

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

चढाव आये उसका भी चित्रण साहित्य में हुआ है। कहानी साहित्य की एक प्रभावशाली और लोकप्रिय विधा है। भोगे हुए क्षणों की अभिव्यक्ति कहानी में होती है। कहानीकार कुछ अपनी कहता है कुछ दूसरों की। किन्तु दूसरों की कहते समय वह उसे अपनी अनुभूति बना लेता है।

यशपाल पूर्व कहानियों में नारी का चित्रण अनेक अंगोसे, दृष्टिसे तथा उतार-चढाव के साथ हुआ है। नारी की ओर देखने का दृष्टिकोण शायद एकांगी रहा हो लेकिन फिर भी उसे छोडकर वे अपनी कहानी पूरी कर ही नही सके। पाश्चात्य विचारों के प्रभाव के साथ-साथ जन जागरण होता गया, जिसके परिणाम स्वरूप नारी की ओर देखने का दृष्टिकोण भी बदलने लगा। इस दृष्टिकोण में जो क्रमिक विकास हुआ उसका चित्रण हम हिंदी कहानी के विकास में क्रमश: देख सकते है।

नारी के प्रति कहानीकारों के दृष्टिकोण में <u>क्रमिक विकास :</u>

१) प्रेमचंद पूर्व कहानी
२) प्रेमचंद युगीन कहानी
३) प्रेमचंदोत्तर कहानी -
    अ) फ्रायड का मनोविश्लेषण
    ब) मार्क्स की विचारधारा

१) प्रेमचंद पूर्व कहानी में नारी -

प्रेमचंद पूर्व काल अर्थात उन्नीसवी शताब्दीके उत्तरार्ध में भारतीय नारी के सामाजिक और पारिवारिक जीवन में अनेक उतार चढाव आये। पश्चिमी सभ्यता के अनुकरण के कारण उच्चवर्गीय भारतीय स्त्री-पुरुषों में

विलासिता, बाह्याडम्बर आदि बाते बढती जा रही थी। समाज पर अनेक कुरीतियोंका प्रभाव था। ऐसे समय पश्चिमी विचारों से प्रभावित साहित्यकार अपनी कहानियों के द्वारा भारतीय समाज को उपदेश देने की चेष्टा कर रहे थे। प्राचीन भारतीय परंपरा का आदर्श अपने नारी पात्रों के द्वारा समाज के सामने प्रस्तुत करना चाहते थे। इस दिशा में कुछ प्रयत्न इस काल में हुए -

हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी ' इंदुमती ' में पं. किशोरीलाल गोस्वामी ने इंदुमती के व्यक्तित्वमें सौंदर्य के साथ धैर्य, साहस और दृढ-निश्चय के सत्गुणोंका स्वाभाविक विकास दिखाया है।

' ग्यारह वर्ष का समय ' कहानी में पं. रामचंद्र शुक्ल ने स्त्री का प्रेम और उसकी अविचल निष्ठा को पति भक्तिके प्रेरक तत्व के रूप में स्वीकारा है। अपने कार्य, व्यवहार तथा आचरण के द्वारा वह भारतीय सती नारी का आदर्श प्रस्तुत करती है।

२) प्रेमचंद युगीन कहानी में नारी -

हिंदी साहित्य में प्रेमचंद का अविर्भाव एक महान उपलब्धि के रूप मे हुआ। उन्होंने साहित्य में आमूलाग्र परिवर्तन किया। जीवन के हर कोने को मनुष्य जीवन की सर्व सामान्य घटनाओं को, सदियों से पीडित, उपेक्षित दीन-दलित मानव को और युगों-युगों से असहाय अबला को नवजीवन का संदेश प्रदान किया। इन सबके सुख-दुःख को भारतीय आदर्शोंके अनुसार यथार्थ भूमि पर चित्रित किया। इन सबके कारण प्रेमचंद का स्थान हिन्दी साहित्य में मील के पत्थर की तरह निश्चल है।

प्रेमचंद्र -

प्रेमचंद की आरंभिक कहानियों मे नारी पात्रों के व्यक्तित्व का आधार आदर्श और मर्यादा का पालन ही है। कष्ट-सहिष्णुता, त्याग, व्यथा के विष को सहर्ष पी जाने की क्षमता का समावेश इसी उद्देश्य से नारी व्यक्तित्व में है कि आदर्श-रक्षण का उत्कर्षयुक्त चित्रण किया जा सके। विभिन्न वर्गों और सामाजिक स्तरों से प्राप्त नारी-पात्र समान रूप से आदर्श-पालन की ओर उन्मुख है। अपनी पारिवारिक मर्यादा का रक्षण उनके समक्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है। विभिन्न अवस्थाओं की नारियों के व्यक्तित्व को विभिन्न आदर्शोंकि आलोक मे प्रस्तुत किया गया है।

प्रेमचंद नारी को उसकी महानता और दैवी गुणों के कारण, पुरुष से श्रेष्ठ मानते है, जो उनके युग के अनुरूप है। नारी सेवा, त्याग, आत्मसमर्पण, पवित्रता, स्नेह, वात्सल्य, संयम, विनय, क्षमा, धैर्य, सहिष्णुता, लज्जा, आत्माभिमान आदि श्रेष्ठ और उदात्त भावो की साक्षात मूर्ति है। नारी की इन्ही विशेषताओं का वर्णन प्रेमचंद की कहानियों मे स्पष्ट रूप से हुआ है। नारियों का अपमान करनेवालों को वे अक्षम्य मानते है। आधुनिक शिक्षित भारतीय नारी का उन्होंने वही विरोध किया है, जहाँ वह नौकरी करने, स्वतंत्र और विलासपूर्ण जीवन व्यतीत करने और पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण मे ही अपने नारीत्व का चरम ध्येय मान लेती है।

इस युगकी कहानियों मे सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत नारी की विभिन्न समस्याएँ विशद रूप से चित्रित हुयी है। प्रेमचंदने ` सेवासदन `

(१८१८) उपन्यास लिखकर सर्वप्रथम वेश्यावृत्ति की समस्या का गंभीरता से अध्ययन किया। यह उपन्यास हिंदी साहित्य के विकास मे मील का पत्थर सिध्द हुआ। इसके प्रकाशन के साथ ही हिन्दी साहित्य में क्रांति की एक लहर निर्माण हुयी। वेश्यावृत्ति, विधवा समस्या, अनमेल विवाह, स्वच्छन्द प्रेम की समस्या संयुक्त परिवार का विघटन आदि अनेक विषयों को लेकर अनेक कहानियाँ लिखी गयी।

इन कहानियों के स्त्री पात्रों को यथार्थ की भूमि पर प्रतिष्ठित करते हुए प्रेमचन्द ने उन्हें आदर्शवादी प्रवृत्तियों से जोड दिया है। आदर्श रक्षण और मर्यादा-पालन की प्रवृत्ति इस काल की कहानियों मे दृष्टिगत होती है। `रानी सारन्धा` में `सारन्धा` का त्याग और सत्साहस उसे आदर्श नारी का रूप प्रदान करता है। `बडे घर की बेटी` में `आनन्दी` अपनी सहनशीलता तथा सद्भाव से पारिवारिक संकट का निवारण कर आदर्श गृहिणी की कुशलता का परिचय देती है। `मर्यादा की वेदी में प्रभा` `पाप का अग्निकुंड` में `राजनन्दिनी` अपनी उच्चस्तरीय भावनाओं तथा निष्ठा द्वारा भारतीय नारी के उच्चादर्शों के अनुरूप कार्य करती है। `पंचपरमेश्वर` के `खाला` का व्यक्तित्व भी आदर्श से अनुप्राणित है। `सौत` मे गोदावरी का आदर्श रूप उभरता है तथा `ममता` मे माँ की उदात्त-स्नेह वृत्ति का परिचय मिलता है। समाज की परम्परागत मान्यताओं का समर्थन तथा प्रचलित आदर्शों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता हैं। मर्यादा-रक्षण तथा पतिव्रत धर्म के निर्वाह की प्रबल भावना तथा अविचल निष्ठा सभी वर्गों की स्त्रियों में विद्यमान है। `मर्यादा की वेदी` की `प्रभा` राजकुल की स्त्री है और समाज में उसके परिवार की मान्यता तथा प्रतिष्ठा का विशिष्ट उच्चस्तर है। फिर भी अपनी व्यक्तिगत कामनाओं को कुचल कर वह मर्यादा-रक्षण के निश्चय को व्यक्त करती है।

` जेल ` कहानी में मृदुला के व्यक्तित्व का उदात्त स्वरूप अंकित किया गया है। महात्मा गांधी के सत्याग्रह और असहयोग आन्दोलन की वेदी पर अपने को सोत्साह अर्पित करनेवाली नारी के व्यक्तित्व का यह अंकन अपूर्व सफलता के साथ प्रस्तुत किया गया है। नारी पात्र की स्वतंत्र गतिशीलता तथा क्षमता का प्रकाशन ` ब्रम्हा का स्वाँग ` शीर्षक कहानी मे हुआ है।

कोमलता, सदाचार और कर्तव्यनिष्ठा की प्रतिमूर्ति नारी पात्र में भी प्रेमचन्द ने ओजस्विता, विद्रोह और क्रांति के भावों की स्थापना की है। मिस पद्मा, कुसुम और देवी जैसे नारी पात्र प्राचीन गलित विकृत परम्पराओं का तीव्र विरोध करते है। साथ ही इन नारी-पात्रों ने यथार्थ का अवलम्ब ग्रहण किया है। उपेक्षित नारी के क्रोधावेश और दृढ निश्चिय का चित्रण ` लांछन ` कहानी में मार्मिक रूप में प्रस्तुत हुआ है। प्रेमचन्द की साहसिकता और नारी स्वातंत्र्य के प्रबल समर्थन का प्रतीक है, इस कहानी की प्रमुख पात्रा ` देवी `। स्त्रियोचित सद्गुणों और सद्भावों से संयुक्त वेश्या ` माधुरी ` का चरित्र भी उसकी त्याग वृत्ति के कारण आकर्षक और प्रशंसनीय रूप ग्रहण करता है। सद्भावों की विजय को आधार मान कर ` सौत ` शीर्षक कहानी में गोदावरी के व्यक्तित्व को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। ` विमाता ` शीर्षक कहानी में ` अम्बा ` का चरित्र भी मातृ-स्नेह का प्रतीक बन गया है।

प्रेमचंदने ` हारजीत ` कहानी की लज्जावती को एक आदर्श प्रेमिका के रूप में चित्रित किया है। जो अपने प्रेमी को सुखी और प्रसन्न देखने के लिए उसके मार्ग से हट जाना ज चाहती है। वह त्याग, बलिदान, धैर्य, क्षमा, स्नेह और पवित्रता की साक्षात् मूर्ति है। फिर भी उसको उन्होंने देवी नही बनाया है। वह मानवी ही है। ` ऐक्ट्रेस ` कहानी

की तारा के चरित्र-चित्रण मे भी उनकी आदर्शवादी कला के दर्शन होते है। प्रेम का अत्यंत सुंदर और विलक्षण रूप ` त्यागी का प्रेम ` कहानी मे विधवा आनंदीबाई के चरित्र में मिलता है। ` रहस्य ` कहानी में एक ऐसी युवतीका, जो विलासिनी और पतिता है, ऐसा स्वाभाविक चित्रण किया है कि वह `देवी ` लगती है। ` सोहाग का शव ` कहानी की सुभद्रा एक हिंदू पत्नीकी सभी विशेषताओं से युक्त है।

प्रेमचंद की अधिकांश कहानियाँ नारी की सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक चेतना को स्वर देती है। ` बेटोवाली विधवा,`` जीवन की शाम ` आदि कहानियों में प्रेमचंद ने नारियों की आर्थिक विवशताका मार्मिक चित्रण किया है। इतना ही नहीं प्रेमचंद नारियों मे राजनीतिक, चेतना पैदा करना चाहते थे। ` कुसुम,`` जीवन का शाप,`` गृहनीति,` ` लॅाछन ` एवं रहस्य कहानियों में नारी शिक्षा के महत्वपर प्रकाश डाला गया है।

इस प्रकार प्रेमचंद का जो विश्वास था उनका जो दर्शन था, उसका प्रभाव उनके नारी पात्रोंके चरित्र-चित्रण पर स्वाभाविक रूप से दिखायी देता है। उन्होंने अपने विश्वास को नारी पात्रों पर बलपूर्वक आरोपित नहीं किया, बल्कि वह सब कुछ उनका अंग-सा प्रतीत होता है।

<u>जयशंकर प्रसाद</u> -

प्रसाद की कहानियों मे स्त्री पात्रों की तीन दिशाएँ उभरकर सामने आयी है। प्रथम वे जो अतीत गौरव और आदर्शों की प्रतीक है, द्वितीय वे जो आधुनिक परिस्थितियों की जीती जागती तस्वीर है और जिनके हृदय में सामाजिक बंधनो और मान्यताओं के प्रति तीव्र विरोध की

भावना है। और तृतीय वे जो प्रेम के नशे में सदा मदहोश रहती है। इनकी अधिकांश कहानियां स्त्रियों द्वारा ही संचलित हुयी है और वे भी पुरुषों से अधिक जागरूक। पुरुष की गति इनके व्यक्तित्व की परिधि में ही समाहित है, इसलिए ये पुरुष वर्ग को गिरते हुए देखकर उन्हें कर्तव्य ज्ञान करती है और उन्नति पथ की ओर ले आती है।

अपनी उत्तरोत्तर विकसित कहानी कला में प्रसाद ने नारी व्यक्तित्व का रूप महत्वपूर्ण विशेषताओं के साथ अंकित किया है। ` छाया ` में संकलित कहानियों में नारी पात्रों के व्यक्तित्व की रेखाएँ विशेष रूपसे स्पष्ट नही हुयी है। ` प्रतिध्वनि ` की कहानियों तक यह स्थिति किसी न किसी रूप में बनी रही है। ` चितौर उध्दार ` में राजकुमारी के व्यक्तित्व का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि वह एक ओर प्रेम तथा पतिभक्ति का उत्कृष्ट निदर्शन प्रस्तुत करती है तो दुसरी ओर पारिवारिक मर्यादा के प्रति उपेक्षा तथा पिता के प्रति कर्तव्यपूर्ण प्रतिष्ठा सहज-रूप में नही कर पाई है। ` आकाशदीप ` की कहानियों तक आते-आते प्रसाद ने नारी व्यक्तित्व की मार्मिकता को पूर्ण आस्था से ग्रहण किया है। प्रेम तथा कर्तव्य दोनों के निर्वाह में सफल ` चम्पा ` का व्यक्तित्व ` आकाशदीप ` शीर्षक कहानी में इतनी कुशलता तथा प्रभविष्णुता के साथ अंकित किया गया है कि वह प्रसाद कहानी-साहित्य का एक अप्रतिम चरित्र बन गया है। इस संग्रह की कुछ कहानियों में नारी पात्रों का व्यक्तित्व इतने महत्वपूर्ण और भावोत्तेजक रूप में अंकित है कि उसके समक्ष पुरुष पात्रों का व्यक्तित्व धूमिल और उपेक्षित-सा प्रतीत होता है। स्वर्ग के खण्डहर में, ` बनजारा,`` अपराधी ` और ` बैरागी ` जैसी कहानियों में इस तथ्य के प्रमाण विद्यमान है। ` आँधी ` संकलन की कहानियों में प्रसाद जी यथार्थ के धरातल पर उतर आये है। नारी पात्रों में जीवन की कठोरता से जूझने का सत्साहस कहानीकार ने समाविष्ट किया है।

` पुरस्कार ` कहानी की मधूलिका अपनी स्थिति के प्रति पूर्ण सचेत है। अपने कर्तव्य तथा उत्सर्ग के क्षणों को वह सम्पूर्ण निष्ठा के साथ ग्रहण करती है, तथा साहस पूर्वक अपने दायित्व का निर्वाह करती है। ` घीसू ` की बिन्दा, ` दासी ` की फिरोजा, और ` आँधी ` की लैला के व्यक्तित्व में भी यथार्थ के प्रति संवेदनशीलता के तत्व विद्यमान है। ` इंद्रजाल ` की कहानियों में नारी - पात्रों के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास हुआ है। भावुकता के साथ दृढता प्रेम के साथ दायित्व - निर्वाह, सौन्दर्य के साथ साहस के समन्वय का सफल प्रयास नारी व्यक्तित्व के चित्रण के निमित्त किया गया है। ` इंद्रजाल ` कहानी की बेला, ` चित्रवाले पत्थर ` की मंगला, ` गुंडा ` की दुलारी और पन्ना, ` देवरथ ` की सुजाता, ` सालवती ` की सालवती, ` सलीम ` की नूरी आदि नारी पात्र महत्वपूर्ण है।

नारी पात्रों के मानसिक द्वन्द्व का मनोवैज्ञानिक चित्रण करते हुये प्रसाद ने कोमलता, करूणा और भावुकता के समानान्तर प्रतिशोध और आक्रोश की भावना को भी अंकित किया है। इन विरोधी प्रवृत्तियों को चित्रित करते हुये कहानीकार प्रसाद ने अ नारी के उग्र रूप को अनेक प्रकार से व्यक्त किया है। ` आँधी ` और ` पुरस्कार ` कहानियों में कर्तव्य की प्रेरणा से नारी व्यक्तित्व के कठोर, दृढ-निश्चिययुक्त स्पष्ट स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। प्रतिशोध का उद्दाम रूप ` चन्दा ` और ` अशोक ` शीर्षक कहानियों मे देखा जा सकता है। नारी व्यक्तित्व के इस कठोर उग्र रूप में कहीं-कहीं बलिदान का स्तुत्य रूप सहज सौन्दर्य के साथ प्रतिबिम्बित हुआ है। ` देवरथ ` कहानी में प्रसाद जी के इस प्रवृत्ति का उदाहरण प्राप्त होता है। ` दासी ` तथा ` भीख ` कहानियों मे आत्म-सम्मान के प्रति जागृत नारी व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया है।

प्रतिशोध, बलिदान, आत्मसम्मान और कठोरता आदि तत्वों का समन्वय विभिन्न नारी पात्रों के व्यक्तित्व में दृष्टिगत होता है।

प्रसाद युग की कहानियों का आधार स्त्रियां ही है। उनमें इतनी प्रभविष्णुता आ गयी है कि पुरूष इनके छाया मात्र प्रतीत होते है।

नारी चरित्र प्रसाद कला के केन्द्र बिंदु बनकर आये है। उनके ये स्त्री पात्र ही अतीत ह के गौरव और प्राचीन आदर्शोंकि प्रतीक है। ये नारियाँ ही सामाजिक बंधन और परंपराओं के प्रति विद्रोह करती है और अपने अप्रतिम सौंदर्य, अनुपम आकर्षण और प्रभावशाली व्यक्तित्व से कहानी सूत्र का संचालन करती है तथा अपने अंतर में घात प्रतिघात, अन्तर्द्वन्द्व, विद्रोह और उत्सर्ग के तत्व छिपाये रहती है।

<u>विश्वम्भरनाथ शर्मा</u> -

विश्वम्भरनाथ शर्मा ने सामाजिक और सांस्कृतिक सुधारवादी आंदोलनों से प्रभावित कहानियों में सामाजिक रीतिरिवाज और पारिवारिक समस्याओं पर प्रकाश डाला हैं। विधवा विवाह आंदोलन का स्पष्ट प्रभाव `युगधर्म` कहानी पर पडा है। `अबला` कहानी में स्त्री का अबला कहने की धारणा पर व्यंग्य कसा है। कौशिक जी समाज में समूल परिवर्तन चाहते ह थे जहाँ पारिवारिक जीवन में मधुरता हो, स्त्री-पुरूषों के प्रेम मे स्थायित्व हो।

<u>पाण्डेय बेचन शर्मा `उग्र`</u> -

पाण्डेय बेचन शर्मा `उग्र` ने `बलात्कार` कहानी संग्रहमें नारी की दयनीय स्थिति की गाथा प्रस्तुत की है। वे एक स ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जिसमें नारी का उचित सम्मान हो। वह आर्थिक दृष्टि से

परतंत्र न रहे, पुरुष की वासना और कुचक्र का शिकार न बने। अनैतिकताका नाश हो, मूल्यों का विघटन न हो। `उग्र` जी वेश्या जीवन को अनैतिकता का आदि स्तोत और मातृ जाति का अपमान मानते थे। अनमेल विवाह पर तीखे प्रहार करते हुए उन्होंने `आँखो में आँसू,` `काने का ब्याह` और `हत्यारा` कहानियाँ लिखी है। `मो कौ चूनरी की साध` बाल विवाह और वैधव्य जीवन की विडम्बना पर लिखी हुयी सर्वोत्तम कहानी है। `करुणा कहानी` में शोषित नारी के स्वरूप पर आँसू बहाते हुए बडे विश्वास के साथ उन्होंने लिखा है कि नारी का जीवन निरीहमात्र न होकर पुरुष की शक्ति और प्रेरणा है। `उसकी माँ और मेरी माँ` में नारी का साहसी, वीर युक्त, स्वाभिमानी और देशप्रेम पूर्ण जीवन उभरकर आया है। इसके विपरीत आचरण करनेवाली नारी पर `कर्तव्य और प्रेम` कहानी में गर्हणा की गयी है। `मुक्ता` कहानी में भावप्रवाण नारी हृदय का आकर्षण युक्त चित्रण है। उसके सौंदर्य, उदारता तथा भोले स्वभाव का `उग्र` जी ने सुरुचिपूर्ण अंकन किया है।

<u>वृन्दावनलाल वर्मा</u> -

वृंदावनलाल वर्मा ने `राखी बंद भाई` कहानी में राजपूत-कुल की नारी के विश्वास तथा निष्ठा को ऐतिहासिक घटनाचक्र के माध्यम से प्रस्तुत किया है। `स्क्रेजिस्ट की पत्नी` कहानी में नारी अधिकारों का विश्लेषण किया है। उनके विचारों में नारी जीवन में संतुलन तथा विवेक का महत्वपूर्ण स्थान है। पुरुष वर्ग के समान अधिकारों को हठपूर्वक प्राप्त करने पर भी नारी को संतोष एवं सुख की उपलब्धि नहीं हो सकती।

रायकृष्ण दास -

रायकृष्ण दास ने ` आँखों की थाह ` कहानी में सुषमा के उदात्त चरित्र का अंकन बडी कुशलता से किया है। विभिन्न प्रतिकूल स्थितियों में भी वह अपने शील के संरक्षण में तत्पर रहकर अपनी चारित्रिक दृढता का परिचय देती है। सामाजिक आदर्शोंकी आधार भित्ति पर अंकित ` नई दुनिया ` कहानी में वेश्या जीवन का संवेदनापूर्ण चित्रण किया है और स्तुत्य साहसिकता के साथ चिरागी और गजरा जैसे पात्र कहानी की चरम परिणति में पति-पत्नी के संबंध का गौरव प्राप्त करते है। ` सुहाग ` कहानी में पंद्रह वर्षीय किशोरी की मनोव्यथा का अंकन हुआ है। वृध्द पति के प्रति विरक्त होकर वह तरूण मुनीम की ओर आकृष्ट होती है। परंतु मन के इस ह रहस्य को वह किसी पर प्रगट नही होने देती। चिंता में घुलकर वह अस्वस्थ हो जाती है और अंत में मृत्यु के अंक में प्रविष्ट हो जाती है।

सूर्यकांत त्रिपाठी ` निराला ` -

` निराला ` ने ` पद्मा और लिली ` कहानी में अन्तर्जातीय विवाह की समस्या को उठाया है। ` ज्योतिर्मय ` में विधवा-विवाह और दहेजप्रथा की समस्या को स्थान मिला है। ` श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी ` मे ठुकराई हुयी प्रेमिकाकी हुंकार है। ` सखी ` और ` क्या देखा ` कहानियों में नायिकाओं की त्याग भावना को प्रस्तुत किया गया है। उनकी अधिकांश कहानियों में नारी की तत्कालीन सामाजिक अवस्था का चित्रण हुआ है। इसीलिए कुछ कहानियोंके शीर्षक नायिकाओं के नाम पर ही रखे गये हैं। वस्तुत: इनकी अधिकांश सामाजिक कहानियां नायिका प्रधान

है । इन नायिकाओं को दो वर्गोंमे विभक्त किया जा सकता है - परिस्थिति के सामने पराजित हो जानेवाली एवं परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करनेवाली । प्रथम वर्ग की नारियाँ अपनी स्थिति से संतुष्ट नही है और वे मनोनुकूल परिवेश निर्मित करने के लिए यत्किंचित प्रयत्न भी करती है किन्तु समाज के कठोर बंधनों में तड़फड़ाकर रह जाती है । इसके विपरीत दूसरे वर्ग की नारी पात्रों को संघर्षोपरान्त सहज सफलता मिल जाती है और वे अपने मनोनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न कर लेती है ।

<u>भगवती प्रसाद वाजपेयी</u> -

भगवती प्रसाद वाजपेयी ने अपने कहानियों के नारी पात्रों द्वारा यह दिखाया है कि आज की नारी अपनी स्वतंत्रता की प्रबल समर्थक बन गयी है । वह प्रेम स्वातंत्र्य और आर्थिक स्वातंत्र्य दोनों के पक्ष में है । वह यह तो भली प्रकार जान गयी है कि उसे पराधीन होकर नही रहना है पर किन उपायों से वह स्वाधीन हो सकती है और स्वाधीन होकर उसे किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए, यह वह अभी तक स्थिर नहीं कर पाई है । इसलिए उसके जीवन में अनेक प्रकार की विसंगतियाँ और मानसिक विषमताएँ उत्पन्न हो जाती है । वाजपेयी ने अपनी कहानियों में नारी जीवन की विसंगतियों, वर्जनाओं और अवरूध्द आकांक्षाओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है । उनकी कहानियोंकी नायिकाएँ केवल क्रांतिकारी अथवा राष्ट्रीय चेतना युक्त पुरूष की ओर ही आकर्षित करती है । ` अमूल्य भेट ` कहानी का आकर्षण इसी प्रकार का है । ` उध्दार ` और ` सूखी लकडी ` आदि कहानियों में वैधव्य जीवन पर आंसू बहाए है । अनमेल विवाह को लेकर ` दुग्धपान,`` शैतान,`` जहाँ सभ्यता साँस लेती है,`` एक प्रतीक्षा ` आदि कहानियाँ [redacted] लिखी गयी है ।

नारी के दर्द, दु:ख, शोषण, उत्पीडन, प्रेम और नैराश्य की संवेदनाओं को उन्होंने अपनी कहानियों का कथ्य बनाया है। बिखरते हुए परिवार, रूढिबध्द विवाह पध्दति आदि सभी ने नारी जीवन को तोडकर रख दिया है। वस्तुत: नारी जीवन की वेदना गाथा बचपन से ही प्रारंभ हो जाती है। किशोरी बनने से पूर्व ही उसे नारीत्व ओढने के लिए दिया जाता है और जब तक उमंग का साक्षात्कार इसे हो, तब तक वह पतिगृह की कूटनीति और उत्पीडन का शिकार हो जाती है। कही वह विधवा हो गयी तो उसका रहा-सहा सम्बल भी चला जाता है। उन्होंने जीवन के यथार्थ को समीप से देखा है और उसपर अपने ढंग से सोच-विचार कर उसके कारणों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है।

सुभद्राकुमारी चौहान -

सुभद्राकुमारी चौहान की नारी जाति की विभिन्न समस्याओं तथा भावनाओंका अंकन करनेवाली पारिवारिक तथा सामाजिक कहानियाँ है - `भग्नावशेष,`` होली,`` परिवर्तन,`` कदम्ब के फूल,`` आहुति,` `अनुरोध,`` ग्रामीणा,`` नारी हृदय,`` दो साथी,`` मंगला` आदि। उनकी अधिकांश कहानियाँ नारी जीवन की समस्याओं और मनोभावों से संबंधित है। उन्होंने विवाहित नारियों के जीवन को प्राय: सुखी नही दिखाया क्योंकि उनपर सदा पति की कटु, शंकालु, उपेक्षाशील, अहंवादी, स्वार्थी और पौरूष प्रकृति का प्रकोप बना रहता है। उन्होंने अपनी अधिकांश कहानियों मे पारिवारिक जीवन के करूण एवं कुत्सित पक्षों का ही उद्घाटन किया है। `किस्मत,`` नारी हृदय,`` एकादशी,`` असमंजस` और `कल्याणी` शीर्षक कहानियों में विधवा नारियों की करूणा प्रस्तुत हुयी है।

उषादेवी मित्रा -

उषादेवी मित्रा की सामाजिक कहानियों मे प्रमुख विषय है - नारी एवं पुरुष के मध्य परस्पर प्रेमाकर्षण नारी का त्याग एवं सहनशीलता, पुरुष का स्वार्थ एवं हृदय हीनता, पुरुष की भ्रमरवृत्ति और नारी का एकनिष्ठ प्रेम, नारी के प्रेम विह्वल और मातृत्व के आकांक्षी मन की भावपूर्ण अभिव्यक्ति, विधवा जीवन की विडम्बना, वेश्या जीवन आदि । इन सभी कहानियों मे उषादेवी मित्रा को भारतीय गार्हस्थिक जीवन पर लिखी गयी कहानियों मे सबसे अधिक सफलता मिली है । नारी होने के कारण उन्हें नारी के अन्तर्जगत को बडे ही मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने मे पूर्ण सफलता मिली है ।

कमलादेवी चौधरी -

कमलादेवी चौधरी ने ऐसी नारियों को अपनी कहानियों में गर्वसहित स्थान दिया है जो निर्धन होने पर भी अपनी लज्जा और स्त्रीत्व की रक्षा करती है ।

३) प्रेमचंदोत्तर कहानी में नारी -

प्रेमचंद युगके हिन्दी कहानी की विचारधारा की आधारभूमि समाज थी जो सामान्यत: १९०५ से १९३६ तक व्याप्त रही । प्रेमचंद के जाते जाते हिन्दी कहानी ने एक नया और स्पष्ट मोड लिया । सामान्य जीवन की दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से कहानी अलग होती गयी । उसका झुकाव मनुष्य के मानस की सारी प्रक्रियाओं के उद्घाटन की ओर एवं आन्तरिक संभावनाओं की ओर होता गया । सन १९३६ के बाद हिन्दी कहानी का

मुख्य विषय धन-लालसा और यौन-बुभुक्षा रहा । यही दो कथावस्तु के आधार है जिनपर कहानी पढते ही दृष्टि पडती है । ये सामाजिक जीवन के अविच्छिन्न अंग है जिनसे साहित्यकार अपने को अलग नही कर सकता । प्रेमचंद के पश्चात हिन्दी कहानी मे इन दो पहलुओं का चित्रण हुआ वह सामाजिक जीवन का सहज अंग होने पर भी दो प्रमुख प्रभावों के कारण हुआ । ये दो प्रभाव थे - १) मार्क्स की विचारधारा २) फ्रायड का मनोविश्लेषण ।

मार्क्स और फ्रायड दोनों के ही दर्शन एक तरह से एकांगी सिध्द हुए है । मानव जीवन के दो पहलू होते है - एक बाह्य, दूसरा आंतरिक । मार्क्सवाद व्यावहारिकता एवं सामाजिकता पर अधिक बल देता है, तो मनोवैज्ञानिक विचारधारा अन्तर्जगत पर । पर यथार्थ जीवन में दोनों पहलुओं का सामंजस्य अभिन्न रूप में मिलता है । इन दो बाह्य प्रभावों के कारण हिंदी साहित्य में एक नयी प्रबुध्द चेतना का सूत्रपात हुआ । काव्य, निबंध, कहानी और उपन्यास - साहित्य के सभी अंगों में सामाजिक शोषण के प्रति आक्रोश और समाज में सब वर्गों की समानता की मांग परिलक्षित होती है । इसकी तर्क संगत परिणति के रूप में इस काल का नारी चित्रण भी एक नये यथार्थ पर स्थापित हुआ । वैज्ञानिक अध्ययन और विश्लेषण के फलस्वरूप नये नैतिक मूल्यों और नये धरातलों की स्थापना द्वारा नारी की वैयक्तिकता का महत्व बहुत बढ गया ।

इस चित्रण में मोटे तौर पर दो प्रवृत्तियां दिखाई देती है । पहली मनोवैज्ञानिक चित्रण की प्रवृत्ति और दूसरी समाजवादी चित्रण की प्रवृत्ति । जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी और अज्ञेय ने यौन संबंधी समस्याओं और स्वच्छंद प्रेम की समस्याओं को मनोवैज्ञानिक रूप दिया है । इन्होंने ऐसे चरित्र उपस्थित किये है जो सामाजिक उत्तरदायित्व से इन्कार करते हुए अपनी भावनाओं में लीन है । दूसरी ओर समाजवादी प्रवृत्ति मार्क्स से प्रभावित थी ।

यशपाल, रांगेय राघव, उपेंद्रनाथ अश्क, अंचल, भगवती चरण शर्मा और नागार्जुन ने मुख्यत: समाजवादी दृष्टिकोण अपनाया है। उन्होंने सामाजिक परिस्थिति में व्यक्ति को व्यापक एवं सर्वांगीण रूप में देखने का प्रयास किया है। ' यद्यपि मार्क्सवादी विचारधारा वर्ग-संघर्ष द्वारा समाज में क्रांति पर बल देती थी और फ्रायड की मनोविश्लेषणात्मक प्रवृत्ति सामाजिक परिवर्तन के संबंध मे मौन रहकर केवल व्यक्ति - मन के अन्तर्पटोंका उद्घाटन करती थी। फिर भी हिन्दी कहानी में नारी चित्रण के संदर्भ में, उन दोनों में एक साम्य दिखायी देता है। मार्क्सवादी लेखक यौन संबंधोंपर बल देते थे और मनोवैज्ञानिक लेखक भी। उनकी विभिन्नता उद्देश्यगत और शैलीगत विभिन्नता थी पर विषयगत नही। '

अ) फ्रायड का मनोविश्लेषण -

मनोवैज्ञानिक सिध्दांतो के प्रकाश में आधुनिक कहानीकारोंने नारी मन की कुंठाओं, वर्जनाओं और दमित वासनाओंका एवं उनके उदात्तीकरण का चित्रण किया। प्रत्येक कहानीकार ने समस्या को अपने विशेष दृष्टिकोण से देखा है और मनोविज्ञान को साधन रूप में मानकर भी यथार्थ का चित्रण करने का प्रयत्न किया है। जिस प्रकार जैनेंद्र ने मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ-साथ गांधीवादी अहिंसा के आदर्श का समावेश किया है, उसी प्रकार इलाचंद्र जोशी ने फ्रायड, एडलर, युंग जैसे मनोविश्लेषकों के सिध्दांतोंके प्रतिपादन के साथ-साथ आधुनिक नारी मन को, उसकी समस्याओं को समझाने की चेष्टा अपने विशिष्ट मत के अनुसार की है और उसके चरित्र में दया, क्षमा, ममता, प्रेम, त्याग एवं मातृत्व की भावना मानने के कारण उसके प्रति श्रध्दा व्यक्त की है।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

हिन्दी कहानीकारों में सबसे अधिक इलाचंद्र जोशी ने नारी के चेतन, अर्धचेतन और अवचेतन मन की छान बीन करके उनके मानसिक ग्रंथियों और विकृतियों से ग्रसित नारी एवं उसके काम-दमन-जनित कार्य-कलापों और हीनताग्रस्त आत्मलीनता का चित्रण मनोविश्लेषणवादी दृष्टिकोण से किया है।

जैनेंद्र ने हिंदी कथा प्रवाह की बहिर्मुखी प्रवृत्ति को अन्तर्जगत की ओर मोडने की चेष्टा की है। वे वर्णनात्मक से अधिक गवेषणात्मक है। उन्होंने अपनी कहानियों मे मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पध्दति को अपनाते हुए जीवन में गांधीवादी सिध्दांतों की प्रतिष्ठा की है।

विवाहोपरान्त भी नारी के निजी व्यक्तित्व को स्वतंत्रता प्रदान करने की चेष्टा जैनेंद्र ने अपनी कहानियों के द्वारा की है। विवाहित नारी के जीवन मे दूसरे व्यक्तिके आकर्षण का चित्रण किया है। ये नारियां विवाह बंधन बाद भी प्रेम के स्वाभाविक आकर्षण को अस्वीकार नहीं कर पाती।

इस युग के लगभग प्रत्येक कहानीकार ने यौन संबंधो की समस्याओं तथा स्वच्छंद प्रेम की समस्याओं को मनोवैज्ञानिक ढंग से अपने अपने दृष्टिकोण और टेकनिक द्वारा प्रस्तुत करने की कोशिश की है। उनका चित्रण प्रेमचंद युग की तरह वस्तुनिष्ठ न होकर व्यक्तिनिष्ठ ढंग पर हुआ है।

ब) मार्क्स की विचारधारा -

यथार्थवादी दृष्टिकोण का ही एक रूप है - साम्यवादी दृष्टिकोण। साम्यवादी दृष्टिकोण से अनेक कहानिकारों ने नारी-चरित्र विकास को परखने का प्रयास किया है। उन्होंने नारी को परंपरागत रूढियों से मुक्त कर राजनैतिक क्षेत्रमें पुरूष के समकक्ष लाकर खडा कर दिया है।

साम्यवादी लेखक पूंजीवादी समाज में दो वर्ग मानते है, एक शोषक और दूसरा शोषित। वे पुरूष को शोषक और नारी को शोषित वर्ग के अंतर्गत मानते है। इस समाज में अधिकांश नारियाँ भी आर्थिक गुलामी से ग्रस्त है। यह आर्थिक विपन्नता उनके व्यक्तित्व को अत्यंत सकीर्ण और क्षुब्ध कर देती है। नैतिक मन्यताएं और चारित्रिक मूल्य भी गिर जाते है। नारी में जो मनोवैज्ञानिक कुंठाए, मानसिक विक्षिप्तता और जो यौन विकृतियाँ पायी जाती है, उनका मूलाधार आर्थिक है। इस दृष्टिकोण के प्रमुख कहानीकार है यशपाल।

यशपाल की कहानियों में वेश्या वर्ग की स्त्रियाँ अनेक है। पेट की लाचारी के कारण वेश्या देह विक्रय के लिए विवश हो जाती है। वेश्या तफरीह के लिए वेश्या-व्यवसाय नही करती, वह उसकी मजबूरी होती है। `उपदेश` की प्रौढा वेश्या ने इसी मजबूरी को प्रकट किया है। `आदमी या पैसा` की झारना पैसे के साथ सोने की मजबूरी को ईमानदारी के साथ स्वीकार करती है। वह प्रेम की ईमानदारी का दम नही भरती। किन्तु इस प्रकार दम न भरते हुए भी वह हराम का नहीं खाती। जवानी के ढलते ही इन वेश्याओं की स्थिति `चूसी हुयी गंडेरी` की हो जाती है। जवानी का उपयोग टकसाल के समान कोई एक-आध ही कर पाती है। अमला ऐसी ही एक वेश्या है। वह घर से निकाली गयी थी और विवश होकर वेश्या बनी थी। `इसी सुराज के लिए` कहानी की वेश्या मुनीर भी आर्थिक दृष्टि से विपन्न प्रतीत ह नहीं होती। यशपाल ने वेश्याओं के चित्रण में कहीं भी उनके मानसिक अंतर्द्वन्द को स्थान नहीं दिया है। वे सामान्यत: निर्द्वंद है।

भगवतीचरण वर्मा -

भगवती चरण वर्मा की ` विवशता ` कहानी नारी की सिसकन लिए हुए है । उन्हें नारी का आधुनिक रूप मान्य नहीं है । ` प्रजेन्ट ` और ` उत्तरदायित्व ` कहानियों में आधुनिकता को अस्वीकार किया गया है । स्थान स्थान पर उन्होंने नर-नारी कर्तव्यों की चर्चा की है ।

उपेंद्रनाथ अश्क -

उपेन्द्रनाथ ` अश्क ` ने यथार्थवादी दृष्टिकोण से निम्न-मध्यवर्गकी विभिन्न प्रवृत्तियों की नारियोंका चित्रण किया है । उनकी कहानियोंका आधार सामाजिक है । इसलिये उनकी कहानियाँ सामाजिक रंजन और सामाजिक मंगल दोनो उद्देश्यों की पूर्ति करती है । उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से नारी समस्याओं को प्रस्तुत किया है । साथ ही उन्हे आत्म-निर्भर बनाने का नारा बुलंद किया है । यही आत्मनिर्भरताअ और वृध्द विवाह जैसी बुराईयों को दूर कर सकती है । अर्थ विवाह को स्वार्थ लिप्त कर देता है । अर्थ स्वार्थ और आक्रोश दोनों को एक साथ जन्म देता है अत: इस अर्थ की मध्यस्थता को हटाकर नारी विरोधी सभी रूढिगत मान्यताओं को समाप्त करना आवश्यक है ।

रांगेय राघव -

रांगेय राघव की ` नारी का विक्षोभ ` एक ऐसी सभ्य, सुशिक्षित और आत्मनिर्भर स्त्री की कहानी है जो विवाहोपरांत पति की इच्छाओं में बंध जाती है । वह आगे पढ नहीं सकती । साइकल पर च[illegible]
अन्य पुरूष से दो क्षण भी बात नहीं कर सकती । गाव

कहते है। अधिक रात गये तक पढने पर भी वहाँ अंकुश है। वह इ उस दमघोट वातावरण के प्रति विद्रोह कर देती है और माई के यहाँ इलाहाबाद आकर अध्यापन करने लगती है तथा स्वतंत्र जीवन व्यतीत करने लगती है। लेखक को ऐसे नारी के प्रति पूर्ण सहानुभूति है। `गदल` एक ऐसी विचित्र स्त्री की गाथा है जो बेधडक, स्पष्ट वादिनी, दृढ, फुर्तीली, निडर और ममतायुक्त है।

अमृतराय -

अमृतराय ने अपनी कहानियों में नारियोंका पक्ष लिया है। उनके मतानुसार नारियों की जघन्य स्थिति का मूल कारण सामंतवाद और पूंजीवादद्वारा थोपी गयी वैवाहिक रूढियां है और इन रूढियों को बढावा मिल रहा है लज्जा और ममता से। अत: सर्वप्रथम इन पर ही प्रहार होना चाहिए। बाद में तो नारी अपनी प्रगती का मार्ग स्वयं ढूंढ लेगी।

निष्कर्ष :

अपने जन्म-काल से ही हिंदी कहानी नारी-जीवन और विभिन्न समस्याओं के प्रति सतर्क दिखाई देता है। प्रेमचंद पूर्व कहानियों में प्राचीन आदर्शोंके प्रति गहरी निष्ठा होने के कारण कहानीकारों ने उन्हीं आदर्शों के सहारे नारी का चित्रण किया और उन आदर्शों में ही नारी जीवन की सार्थकता की उपलब्धि की। प्रेमचंद काल के कहानीकार प्राचीन और नवीन आदर्शोंमें सामंजस्य की खोज करते रहे ह और इसलिए उन्होंने नारी की सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याओंका हल ऐसे सुधारोंमें पाने की चेष्टा की जिनमें प्राचीन आदर्श की परंपरा भी बनी रहे और नवीन जीवन का स्वरूप भी उतर आये। प्रेमचंद के `आदर्शोन्मुख यथार्थ` का यही रहस्य है।

प्रेमचंद युग के कहानीकारों के अ सम्मुख राष्ट्रीय भावना, नारी की पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ एवं उनके आदर्शों की रूपरेखा स्पष्ट हो चुकी थी। इस कारण इस युग के लगभग सभी कहानीकारों को नारी की विभिन्न समस्याओं के चित्रण मात्र से संतोष नही हुआ। उन्होंने इस समस्याओं के निराकरण पर भी सुधारवादी ढंग से सहानुभूतिपूर्वक विचार किया। प्रेमचंद ने इन समस्याओं को अधिक सूक्ष्मता, कलात्मकता और गंभीरता प्रदान की। उनकी रचनाओं में ये समस्याएँ नारी-जीवन की वास्तविक समस्याओं के रूप में चित्रित हुयी जिसका प्रभाव तत्कालीन समाज पर भी पडा। प्रेमचंद ने ही सर्व प्रथम नारी के सर्वांगीण जीवन और व्यक्तित्व को समवेदना पूर्वक ग्रहण किया।

इस युग के कहानीकार विशेषकर मध्यमवर्गीय नारी के महत्वपूर्ण प्रश्नों को लेकर ही हिन्दी साहित्य में अवतीर्ण हुए। यद्यपि उच्च और निम्नवर्गीय नारी की समस्याओंका भी चित्रण हुआ है, फिर भी यह चित्रण इस युग की मुख्य विशेषता नहीं है। इस युग के कहानीकारोंने नारी की पारिवारिक समस्याओंसे भी अधिक सामाजिक समस्याओं को आधार बनाकर अपनी कहानियों की रचना की है। उन्होंने इन समस्याओंके प्रत्येक पहलू का विशद रूप से अध्ययन किया, और उनके समाधान की खोज का भरकस प्रयत्न किया।

प्रेमचंद युगीन कहानियों में नारी का चित्रण मुख्य रूपसे पत्नी के रूप में हुआ। प्रेयसी और माता का रूप गौण है। अपने पति से प्रेम और विश्वास करने से ही उसका जीवन सफल हो सकता है। इन दोनों को खोकर वह भटक जाती है। ज्यों ज्यों प्रेमचंद की कहानी कला का विकास हुआ, त्यों त्यों नारी पात्रों के चित्रण में भी विकास होता गया। सभी नारी पात्रों के संस्कार यथार्थ रूप में जीवन से लिए गये है।

प्रेमचंद, प्रसाद, विश्वंभरनाथ 'कौशिक,' सियाराम शरण गुप्त, उषादेवी मित्र आदि इस युग के कहानीकारों ने नारी की चारित्रिक विशेषताओंपर अत्याधिक बल दिया है।

नारी जीवन की समस्याओं की दृष्टिसे प्रेमचंद युग के और प्रेमचंदोत्तर काल के कहानियों मे मूलभूत अंतर है। प्रेमचंद युग में मुख्यत: नारी की सामाजिक समस्याओं का ही चित्रण हुआ है जब कि फ्रायड, युंग, एडलर आदि मनोविश्लेषणवादियों के प्रभाव के कारण प्रेमचंदोत्तर काल में नारी मन की मनोवैज्ञानिक गुत्थियाँ मुख्य समस्या बन गयी। इस काल में लेखक ने नारी मन की उथल-पुथल, स्त्री-पुरूष के आकर्षण-विकर्षण अर्थात काम-भाव की समस्या को गहराई से देखना समझाना आरंभ किया। इसके अतिरिक्त नारी की वैयक्तिक और आर्थिक स्वतंत्रता को जितना सबल समर्थन इस युग की कहानियों में मिला है, उतना पूर्ववर्ती कहानियों में नही मिल सका।

प्रेमचंदोत्तर काल की कहानियों में नारी के विवाहोत्तर जीवन की समस्याओंका चित्रण ही मुख्य रूप से हुआ है। साथ ही पुरूष द्वारा नारी के शोषण की समस्या को चित्रित किया गया है। अपने विकसित व्यक्तित्व के कारण नारी में स्वतंत्रता की भावना जाग उठी, जिसके परिणाम स्वरूप पति-पत्नीमें टकराहट होने लगी। साथ ही साथ पर-पुरूष के प्रति ह प्रेम की समस्या निर्माण हो गयी। इस सामाजिक स्थिति का मनोविश्लेषण-वादियों ने लाभ उठाया।

प्रेमचंदोत्तर काल के कहानिकारों ने नारी जीवन को कुछ अधिक गहराई से समझाने का प्रयत्न किया। जैनेंद्र ने नारी की विवशता का और इलाचंद्र जोशी ने उसकी मनोवैज्ञानिक हीन-भावना का चित्रण किया।

यशपाल ने राजनैतिक दल में काम करनेवाली नारी का और पुरूष प्रधान समाज में नारी के विभिन्न बंधनों का रूप उपस्थित किया। नारी के प्रेम की समस्या, वैवाहिक असंगति की समस्या और घर-बाहर की समस्या सभी पर कहानिकारोंने दृष्टिपात किया।

प्रेमचंदोत्तर काल के कहानी की मुख्य समस्या स्त्री-पुरूष के आकर्षण विकर्षण अर्थात कामभाव की समस्या है। प्रेमचंद के पूर्ववर्ती कहानियों में इस समस्या का चित्रण नहीं के बराबर है। प्रेमचंद ने नर-नारी के स्वाभाविक आकर्षण-विकर्षण का मार्मिक चित्रण अवश्य किया है किन्तु समाज के प्रतिबंधो एवं गांधीवादी आदर्शों के कारण इस पक्ष के चित्रण में वे अत्यधिक संयत दिखाई देते है।

प्रेमचंदोत्तर कालीन कहानीकारों ने विवाहित नारी के प्रेम का चित्रण विशेष रूप से किया है। इसके पूर्व के लेखक यह मानते थे कि नारी एक बार जिसको पति रूप में स्वीकार करती है, उसके प्रति सदा तन-मन से समर्पित हो जाती है। किन्तु आधुनिक कहानीकार चेतन की अपेक्षा अचेतन प्रवृत्तियों की और विशेष ध्यान देने लगे, जिसके, परिणाम स्वरूप वे नारी के आंतरिक जीवन में झांकने की कोशिश करने लगे। यदि नारी का मन निश्चल है, वह संपूर्ण मन से प्रेम करती है तो उसकी आत्मा पवित्र है, आदर्श स्वरूप है।

इस प्रकार हम देखते है कि देश की सामाजिक राजनैतिक परिस्थितियों के साथ-साथ हिन्दी साहित्य में और साहित्य की प्रगति के साथ-साथ कहानीकारों में नारी संबंधी दृष्टिकोण में क्रमिक विकास और परिवर्तन होता गया। नारी के सित और असित दो चरम रूपों से आरंभ कर धीरे-धीरे उसके जीवन के प्रति दया, करूणा, ममता दिखाते-दिखाते

लेखक उसके समानाधिकार की माँग करने लगे। बाद में मनोविज्ञान की खोज के साथ एक ओर नारी के मानस लोक का रहस्योद्घाटन हुआ, दूसरी ओर राजनैतिक संघर्ष के परिणाम स्वरूप नारी को सामाजिक प्रतिष्ठा दी गयी। आधुनिक काल तक आते आते भारतीय जीवन में नाना दृष्टिकोणों के समावेश के फलस्वरूप हम कहानीकारों में भी भिन्न भिन्न प्रवृत्तियों का प्रतिपादन पाते है। यद्यपि अधिकांश कहानीकार नारी की स्वतंत्रता, सम्मान रक्षा और समानता का किसी-न-किसी रूप में समर्थन करते है। हिन्दी कहानी की प्रमुख धारा नारी के प्रति न्याय करने में कृतसंकल्प है, यह आनंद की बात कही जा सकती है।